Course – BA Education Hons, part 1
paper – 1 (Philosophical & Sociological Foundation Of Education
Topic – Effect of philosophy on Education
Prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 4 : दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव
Unit 4 : Effect of philosophy on Education

4.1 प्रस्तावना (Introduction) :-

शिक्षा और दर्शन का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है। शिक्षा के सभी तत्वों (अंगों) पर दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। दर्शन शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि को निर्धारित करने में सहायता देता है। शिक्षा जीवन के लक्ष्यों की ओर अग्रसर होती है लेकिन कौन सा साधन लक्ष्य प्राप्ति के लिए उचित है कौन सा अनुचित इसका निराकरण दर्शन द्वारा होता है। इसलिए प्रत्येक देश एवं धर्म के लोगों के जीवन दर्शन में अन्तर पाया जाता है। किसी देश का दर्शन उस समाज को दिशा निर्देश का कार्य करता है। दर्शन निम्न प्रकार से शिक्षा को प्रभावित करता है :-

4.1.1 शिक्षा के उद्देश्यों पर दर्शन का प्रभाव :- (Influence of philosophy on aim of Education)

दर्शन जीवन का दृष्टिकोण उत्पन्न करता है जिससे जीवन लक्ष्य निर्धारित होता है। दर्शन के द्वारा देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। जैसे-जैसे जीवन लक्ष्यों में

होता रहता है। परिवर्तन शिक्षा का उद्देश्य भी परिवर्तित

प्राचीन भारत में जीवन का लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति का था। मध्यकाल में जीवन दर्शन बदला और शिक्षा का उद्देश्य इस्लाम धर्म का प्रचार, इस्लामी संस्कृति का प्रसार तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति हो गया। आज की आधुनिक शिक्षा रोजी-रोटी से जुड़ गई।

दर्शन की विभिन्न धाराओं ने शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित किया। आदर्शवादी ने सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के शाश्वत मूल्यों को जीवन का आधार बनाया और कहा शिक्षा द्वारा इस परम लक्ष्य को प्राप्त किया जाए। प्रकृतिवादी दर्शन ने ईश्वर और समाज को महत्व न देकर मनुष्य की स्वतंत्रता पर बल दिया। इस दर्शन के अनुसार मनुष्य का स्वाभाविक विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। प्रकृतिवादी के बाद प्रयोजनवादी दर्शन का उदय हुआ जिसके अनुसार जो ज्ञान जीवन के लिए उपयोगी है उसका ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा का उद्देश्य है। यथार्थवादी ने शिक्षा का उद्देश्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना माना है

1.2 पाठ्यक्रम पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Phil on Curriculum)

शिक्षा के पाठ्यक्रमों का निर्धारण उद्देश्यों के अनुरूप होता है। यदि उद्देश्य दर्शन प्रभावित है तो पाठ्यक्रम भी उससे अवश्य प्रभावित होगा। प्राचीन भारत में दर्शन आध्यात्मिक था इसलिए जो पाठ्यक्रम बना उसमें धार्मिक विषयों को अधिक महत्व दिया गया। मुस्लिम काल में दर्शन का स्वरूप बदला तथा पाठ्यक्रम में ललित, संगीत, नृत्य, अरबी, फारसी साहित्य एवं इस्लामी संस्कृति प्रमुख रहा।

दर्शन के क्षेत्र में कई विच

का उदय हुआ जैसे- आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद और अस्तित्ववाद। सभी दर्शनों का चिन्तन और विशेषताएँ अलग-अलग है:-

आदर्शवाद -

आदर्शवादी शाश्वतमूल्यों तथा मानव से सम्बन्धित क्रियाओं को अधिक महत्व देते हैं इसलिए आध्यात्मिक क्रियाओं, नैतिक क्रियाओं, सामाजिक शिक्षा, धर्म, दर्शन मनोविज्ञान को पाठ्यक्रम में सम्मिलित की बात करते हैं।

प्रकृतिवाद :-

प्रकृतिवादी शिक्षा के तीन स्रोत मानते हैं- प्रकृति, मनुष्य तथा वस्तु। इसके प्रमुख विषय प्रकृति विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान, इतिहास, समाज विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, साहित्य आदि है।

प्रयोजनवाद :-

पाठ्यक्रम की उपयोगिता एवं अनुभव के सिद्धान्त को सबसे अधिक महत्व दिया गया। अतः विज्ञान, व्यवसाय, हस्तशिल्प कला, गणित, कलात्मक आदि विषयों को प्रमुख माना।

यथार्थवाद :-

यथार्थवाद भी उपयोगिता को अधिक महत्व दिया है। इस दर्शन में सबसे अधिक महत्व भौतिक विज्ञानों को दिया गया।

अस्तित्ववाद :-

अस्तित्ववाद में व्यक्तिगत चिंतन पर बल देता है। इस दर्शन के अनुसार व्यक्ति का अस्तित्व जिससे सुरक्षित रह सके पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों को महत्व दिया जाए। इस प्रकार अस्तित्ववादी पाठ्यक्रम में कला, साहित्य, विज्ञान, भूगोल, संगीत, दर्शन, मनोविज्ञान आदि विषयों को महत्व दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

4.1.3 शिक्षण विधियों पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Philosophy on Teaching methods)

दर्शन का प्रभाव शिक्षण विधियों पर भी होता है। सुकरात प्रश्नोत्तर विधि, प्लेटो ने प्रश्नोत्तर विधि के साथ-साथ संवाद विधि, अरस्तु ने आगमन-निगमन विधि को सर्वोत्तम माना। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार विचार के तीन स्तर हैं- श्रवण, मनन तथा चिन्तन। प्रयोगवादी वैज्ञानिक विधियों को अधिक महत्व दिया तथा यथार्थवादी खेल द्वारा बच्चों को शिक्षा देने की बात कही।

4.1(A) शिक्षक पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Philosophy on Teacher):-

प्राचीन भारत में शिक्षक को देव तुल्य माना गया। आदर्शवादी विचारधारा में ईश्वर को प्रमुख ध्रुव माना गया है लेकिन प्रकृतिवादी शिक्षक की भूमिका को गौण मानते हैं। प्रयोगवादी दर्शन में शिक्षक की भूमिका एक सहायक और मित्र के रूप में निर्धारित की गयी। यथार्थवादी दार्शनिकों का मानना है कि हर चीज का प्रत्यक्ष या इन्द्रिय द्वारा बताया गया ज्ञान ज्ञान स्थायी होता है, किसी के स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ता। भारतीय चिन्तकों का मानना है कि शिक्षक को स्वयं दार्शनिक होना चाहिए। टैगोर कहते हैं- "जिसमें स्वयं का प्रकाश नहीं है वह दूसरे के दीपक को प्रकाशित नहीं कर सकता है।"

4.1.5 अनुशासन पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Philosophy on Discipline)

प्राचीन भारत में अनुशासन दण्ड या दबाव पर आधारित नहीं था वरन् उसका आधार आस्था एवं विश्वास था। प्रकृतिवादी दर्शनशास्त्र में नैतिक मानदण्डों की प्रमाणिकता को अस्वीकार करके

Scanned with CamScanner

बालक की जन्मजात या मूल प्रवृत्यात्मक प्रवृत्ति को मनमाने ढंग से प्रकट होने के लिए अवसर प्रदान करता है। आदर्शवादी मानव व्यवहार को नैतिक आदर्शों के अभाव में अपूर्ण मानती है और बालकों को नैतिक मानदण्डों को स्वीकार करने के लिए अग्रसर करता है तथा उन्हें धीरे-धीरे आचरण का अंग बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना अपना कर्त्तव्य मानता है।"

अरस्तु, प्लेटो, सुकरात ने आन्तरिक अनुशासन को अधिक महत्व दिया।

4.16) शिक्षण संस्थाओं पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Philosophy on Institution):-

शिक्षण संस्थान भी दार्शनिक विचारों से प्रभावित होती है। प्लेटो का विचार है कि शिक्षण संस्थाओं और शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण वांछनीय है क्योंकि राज्य अपनी आवश्यकतानुसार नागरिकों का निर्माण करता है। रूसो का कहना है कि राज्य या कोई भी बाह्य नियंत्रण शिक्षा में बुराई पैदा करता है क्योंकि इसमें कृत्रिमता आ जाती है। अतएव किसी भी स्थिति में राज्य का शिक्षा पर नियंत्रण वांछनीय नहीं है। प्रयोजनवादी दार्शनिक डीवी का विचार है कि विद्यालय सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाला तथा सामुदायिक प्रशिक्षण देने वाला केन्द्र है।

4.17) पाठ्यपुस्तकों पर दर्शन का प्रभाव (Effect of Philosophy on Text books):-

दर्शन का प्रभाव पाठ्यपुस्तकों पर भी पड़ता है। पुस्तकों की रचना दर्शन के अनुसार होती है। जिस समाज या राज्य में जो दर्शन स्वीकार्य होता है, विद्यालयों में उसी के अनुरूप पुस्तकों का चयन होता है। प्लेटो पुस्तकों को महत्व देता है और कहता है - "महान पुस्तकें व्यक्ति को महान बनाती हैं।" प्रकृतिवादी रूसो पुस्तकों का विरोध करता है

उसने इसे बालक के विकास में बाधा पहुँचाने वाल माना है।

4.2 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Discuss the effect of philosophy on aims, curriculum, teaching method and institution of education.

शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा इ पर दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिए।

Scanned with CamScanner